Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2021 GISRRJ | Volume 4 | Issue 6 | ISSN : 2582-0095

वेदों में वर्णित मंत्र द्रष्ट्री ऋषिकाओं का यथार्थ स्वरूप

डॉ प्रियंका आर्या
असिस्टेण्ट प्रोफेसर, संस्कृत विभाग, जम्मू विश्वविद्यालय, जम्मू।

Article Info
Volume 4 Issue 6
Page Number: 82-87
Publication Issue :
November-December-2021
Article History
Accepted : 01 Dec 2021
Published : 25 Dec 2021

शोधसारांश– प्रस्तुत आलेख वेदों में वर्णित मंत्र द्रष्ट्री ऋषिकाओं के यथार्थ स्वरूप पर आधारित है। इस आलेख का उद्देश्य है कि ऋषिकाओं का जीवन दर्शन अत्यन्त निर्मल व धवल है अतः इन तपः पूत मेधा की धनी ऋषिकाओं से आधुनिक समाज की नारियां भी अपने जीवन को तथाविध बनाने हेतु संकलप ग्रहण करें।

मुख्य शब्द–वेद, मंत्र, द्रष्ट्री, ऋषि, यथार्थ,दर्शन, समाज, नारी।

समस्त ज्ञान विज्ञान का उत्स वेद हैं चारों वेदों में देववाणी संस्कृत में निबद्ध मन्त्रों का संग्रहण हैं जिनका दर्शन ऋषियों की भांति ऋषिकाओं ने भी अपने तपोबल एवं ज्ञानबल से किया था, मन्त्रद्रष्ट्री ऋषिकाएँ संख्यात्वेन अल्प हैं अत एव प्रत्यक्षतः ऋषियों के नाम ही व्यवहार में पौनः पुण्येन श्रूयमाण होते हैं परन्तु समाज ने अथवा भारत में इन्हें विस्मृत नहीं किया है और तभी इन वैदिक स्त्रियों को समाज में ब्रह्मवादिनी तथा मन्त्र प्राप्ति ऋषिका के नाम के पुकारा जाता रहा है। वेदों में अनेक ऐसे सूक्त व मन्त्र हैं जिनका दर्शन स्त्रियों ने किया है अतः वेदों में आज भी तत् तत् सूक्तों के आरंभ में ऋषिकाओं का नामाभिधान प्राप्त होता है, तद्यथा अपाला आत्रेयी ऋषिका[1], श्रद्धा कामायनी[2], सावित्री सूर्या ऋषिका[3],सरमा देवशुनी ऋषिका[4] इत्यादि। बृहद्देवता में आचार्य शौनक ने मन्त्रद्रष्ट्री ऋषिकाओं का उल्लेख करते हुए इन्हें ब्रह्मवादिनी अर्थात् ब्रह्म का प्रवचन करने वाली कहा है तद्यथा –

धोषा गोधा विश्ववारा अपालोपनिषन्तिवत्।
ब्रह्मजाया जुहूर्नाम अगस्त्यस्य स्वसादितिः।
इन्द्राणी चेन्द्रमाता च सरमा रोमशोर्वशी।
लोपामुद्रा च नघश्च यमी नारी च शश्वती।
श्रीलाक्षा सार्पराज्ञी वाक् श्रद्धा मेधा च दक्षिणा।
रात्री सूर्या च सावित्री ब्रह्मवादिन्य ईरिताः ।।[5]

इस श्लोक में लगभग 27 ऋषिकाओं के नाम एकत्र परिगणित है, यह एक ऐसा अकाट्य शास्त्रीय प्रमाण है जहॉ स्त्रियों के वेदाध्ययन का उदात्त दृष्टिकोण स्थापित किया जाता है। इससे स्पष्टतया यह परिलक्षित हो रहा है कि किसी समय पुरूषों की तरह महिलाओं को भी वेदाध्ययन व ब्रह्म विषयक प्रवचन करने की पूर्ण स्वतंत्रता थी।

ब्रह्मवादिनी एक समस्त पद है जिसका अर्थ है– ब्रह्म को या ब्रह्म के विषय में बोलने वाली स्त्री। ब्रह्मवादिनी पद मंत्र के प्रतिपाद्य और उसकी अभिव्यक्ति की प्रक्रिया पर बल देता है जबकि ऋषिका पद मंत्र दर्शन

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

की विशेष प्रक्रिया पर बल देता है। प्रज्ञा , मेधा, तप, प्रतिभा, और आन्तरिक ज्ञानान्वेषण की दृष्टि आत्मा के धर्म हैं शरीर के नहीं अतः ये सभी उपर्युक्त दिव्य गुण पुरूष अथवा स्त्री में भेद दृष्टि नहीं रखते।

ऋषिकाओं के सन्दर्भ में ऋषित्व की पारिभाषिक अवधारण भी पुरूष ऋषियों के समान ही है, इन ऋषिकाओं ने भी तपःपूत विमल मेधाबल से मन्त्रों का साक्षात्कार कर ऋषि पद को प्राप्त किया था। आचार्य यास्क कहते हैं–**साक्षात्कृतधर्माणो ऋषयो बभूवुःते अवरेभयः असाक्षात्कृतधर्मेभ्यः उपदेषेन मन्त्रान् सम्प्रादुः**[6] अर्थात्पूर्व काल में धर्म का साक्षात्कार करने वाले श्रेष्ठ ऋषि हुए और इन्होंने ही धर्म का साक्षात्कार न करने वाले अवर ऋषियों को उपदेश के माध्यम से मन्त्र प्रदान किए। यही परिभाषा स्त्री ऋषियों की भी होती है। आचार्य सायण ने इन्हें ऋषि एवं द्रष्ट्री अर्थात् मंत्रों का दर्शन करने वाली कहा है–**अत्रिगोत्रोत्पन्ना विष्वारा नामिकास्य सूक्तस्य ऋषिः**[7]।शौनक ने इन्हें आर्षानुक्रमणी में मुनि कहा है यथा –**पौलोमी शची नाम मुनिः स्मृतः।**[8] ऋषि शब्द का अन्य निर्वचन भी प्रसंगतया ध्येय है। **ऋषिः दर्शनात्, स्तोमान् ददर्श इति औपमन्यवः।**[9] अर्थात् ऋषि वे हैं जिन्होंने तपोबल से समाधि दशा में मन्त्रों का दर्शन किया है। आचार्य शौनक ऋषियों को मन्त्रद्रष्टा ही मानते हैं यथा –**मन्त्रदृग्भ्यो नमस्कृत्वा**[10] इस प्रकार का कथन प्राप्त होता है। आचार्य सायण भी ऋषि शब्द को इसी अर्थ में परिभाषित करते हैं–

ऋषिरतीन्द्रियदष्टा[11] ऋषिः सूक्तद्रष्टा[12] उपर्युक्त परिभाषाएं स्त्री ऋषियों के लिए भी तद्वत् अवधेय है। इनकी विशेष चर्चा नामतः ऋषियों के लिए प्राप्त होती है। सम्प्रति सरमा ऋषिका की संस्तुति प्रस्तुत है। ऋग्वेद के दशम मण्डल में संकलित 108 वॉ सूक्त **''सरमा पणि संवाद''** के रूप में प्रचलित है। इस सूक्त में 11 मन्त्र हैं जिसमें 6 मन्त्रों की ऋषि सरमा है।

सरमा शब्द की व्युत्पत्ति गत्यर्थक सृ धातु से हुई है। जिसका अर्थ है – सरणशील, गतिशील या गमन करने वाली। आचार्य यास्क मध्यस्थानीय स्त्री देवताओं में सरमा का उल्लेख करते हैं तद्यथा **सरमा सरणात्**[13] अर्थात् सरमा वह है जो गतिशील है। मैत्रायणी संहिता में **''वाग् वै सरमा''**[14] कहा है अर्थात् सरमा वाक् है जो कि अन्तरिक्ष में स्तनयित्नुलक्षणा विद्युत् के रूप में रहती है और समय आने पर वर्षाकाल में गरजती हुई प्रकट होती है। इस विशिष्ट विद्युत के समान गति के कारण ही उसे सरमा कहा गया है। यजुर्वेद भाष्यकार आचार्य महीधर सरमा शब्द की व्याख्या करते हुए लिखते हैं–**''सह रमन्ते देवा विप्रा वा यस्यां सा सरमा वाक्''**[15] अर्थात् जिसमें देवता तथा ब्राह्मण समान रूप से रमण करते हैं उस वाणी का नाम सरमा है। वस्तुतः देव व ब्राह्मण ही नहीं अपितु व्यक्तवाक् जिनके भी पास है वे भी जिस वाणी में एक साथ रमण करते हैं इसीलिए उसका नाम सरमा है। यहॉ यह स्पष्ट हो जाता है सरमा वेदवाणी है। इस प्रकार सरमा वह सशक्त नारी या ऋषिका हुई जो वेदज्ञ है और वैदिक आज्ञा को कर्म में व्यवहार में उतारती है एव स्वयं सशक्त होती है और दूसरों को भी इसके लिए प्रेरित करती है, आवश्यकता पड़ने पर परिवार समाज व राष्ट्र में अन्याय के विरूद्ध आवाज उठाने का साहस रखती है। सरमा के विषय में उपर्युक्त नैरूक्त व ऋषि दयानन्द की दृष्टि प्रस्तुत हुई है। कतिपय भाष्यकार इससे भिन्न मत रखते हैं और एक ऋषिका को देवशुनी शब्द से संबोधित करते हैं जिसका अतीव निन्दित अर्थ है जबकि देवशुनी शब्द सम्पूर्ण सूक्त में कहीं नहीं है। ऋग्वेद में अन्य मन्त्र में **''सारमेयौ श्वानौ''**[16] का प्रयोग प्राप्त होता है जिसका अर्थ है सरमा के दो

अपत्य है' सरमा = उषा के दिन रात रूपी दो पुत्र हैं जो निरन्तर गतिशील होने से **श्वानौ – श्वि गतिवृद्धयोः**[17] कहे गए है किन्तु कथमपि सरमा को देवशुनी कहना अनुचित प्रतीत होता है। सरमा इन्द्रदूती है क्योंकि सरमा गौ अन्वेषण का कार्य कर रही है इसका तात्पर्य यह है कि स्त्रियों को गौ संरक्षण, संवर्धन की विशेष कला आनी चाहिए। दौत्यकर्म जैसे विशिष्ट कार्य के लिए स्त्रियों को व्युत्पन्न मतित्व से युक्त होना चाहिए यही सरमा–पणि संवाद सूक्त का यथार्थ है।

वागाम्भृणी – ऋग्वेद के दशम मण्डल के 125 वें सूक्त की ऋषिका अम्भृण ऋषि की पुत्री आम्भृणी ''वाक्'' अर्थात्– वागाम्भृणी है। सूक्त का देवता आत्मा है। इस सूक्त में 8 मन्त्र हैं सभी में उत्तम पुरूष का प्रयोग हुआ है। ब्रह्म विदुषी वाक् परमपिता परमात्मा के साथ तादात्म्य का अनुभव करते हुए स्वयं को सम्पूर्ण सृष्टि की आधाररूपा के रूप में उपस्थापित करती है, अहं की अभिव्यक्ति सम्पूर्ण सूक्त में ध्वनित हो रही है। **अहं राष्ट्री संगमनी वसूनाम्**[18] अर्थात् मैं राष्ट्र की शक्ति और सम्पूर्ण जगत् की स्वामिनी व अधीश्वरी हूं।

5 वें मन्त्र में कहा गया है– **यं कामये तं तमुगं कृणोमि**

तं ब्रह्माणं तमृषिं तं सुमेधाम्।।[19]

अर्थात् मैं जिसको जैसा चाहती हूँ वैसा निर्माण कर देती हूं। ब्रह्मा–चारों वेदों का ज्ञाता तथा ऋषि = अतीन्द्रिय विषयों कादर्शन कराने वाली सुमेधा दृष्टि से संयुक्त करती हूँ। इस सूक्त में परमेश्वर ने नारी को विशेष शक्ति से प्रेरित किया है जिससे कि वह परिवार को, समाज को जैसा चाहे बना सकती है। वही वीर, विद्वान, सदाचारी, ब्रह्मा, विष्णु, महादेव, सरस्वती, लक्ष्मी सदृश पुत्र–पुत्रियों की जननी है। चारों वेदों के भाष्यकार आचार्य सायण ने उदात्तकण्ठ से नारी को ब्रह्मविदुषी, यज्ञार्हो में प्रथम ऋषिका पदों का प्रयोग किया है। तद्यथा–**अम्भृणस्य महर्षेर्दुहिता वाङ्.नाम्नी ब्रह्मविदुषी स्वात्मानमस्तौत् अतः सर्षिः।सच्चित्सुखात्मकः सर्वगत परमात्मा देवता। तेन ह्येषा तादात्म्यममनुभवन्ती सर्वजगद्रूपेण सर्वस्याधिष्ठानत्वेन चाहमेव सर्वं भवामीति स्वात्मानं स्तौति।**[20] इस सम्पूर्ण सन्दर्भ का अर्थ स्पष्ट ही है। इसी सूक्त के तीसरे मन्त्र में '**चिकितुषी प्रथमा यज्ञियानाम्**'[21] इस मन्त्रार्ध का भाष्य करते हुए वे लिखते हैं–**चिकितुषी अर्थात् साक्षात कर्तव्यं परं ब्रह्म तत्ज्ञातवती स्वात्मतया साक्षात् कृतवती। अत एव यज्ञियानां यज्ञार्हाणां प्रथमा मुख्या।**[22] अर्थात् जो साक्षात करने योग्य परम ब्रह्म है उसका वह साक्षात् कर चुकी है। इसीलिएयज्ञ करने के योग्य यज्ञार्हो में वह प्रथम एवं मुख्य है। आत्मगौरव, स्वाभिमान एवं आत्मतेज से दीप्तिमती वागांभृणी ऋषिका जैसी नारियॉ परिवार, देश, समाज व विश्व में होवें यही इस सूक्त का संदेश है।

रोमशा– ऋग्वेद के प्रथम मण्डल के 126 वें सूक्त के अन्तिम सातवें मन्त्र की ऋषिका ''रोमशा'' है इससे पूर्व के 1 से 5 मन्त्रों के ऋषि कक्षीवान् और छठे मंत्र के ऋषि स्वनय भावयव्य है।[23] यहॉ सायण ने रोमशा को बृहस्पति की पुत्री तथा ब्रह्मवादिनी कहा है। इस मन्त्र के देवता अर्थात् प्रतिपाद्य विषय अथवा संबोध्य भावयव्य है। भव्य के पुत्र भावयव्य ने गान्धार देश की तनया रोमशा से विवाह किया।[24] राजा भावयव्य ने यश की चाहना से सहस्रों सोमयागों में याजकों को बहुत दान पुण्य कर त्रिलोक तक यश प्राप्त किया।[25] भावयव्य से रोमशा का संवाद होता है और वह कहती है मेरे समीप आओ, मेरा प्रगाढ आलिंगन करो, मुझे अल्प रोमों वाली नहीं समझो, मैं गान्धार देश की भविका

(भेड़ शावक) के समान बहुत रोमों वाली पूर्ण यौवना हूँ।[26] ऐसा ही अर्थ लगभग सभी भाष्यकारों ने किया है जो बहुत ही सांसारिक व अश्लील प्रतीत होता है। वेदों में इत्थंभूत लौकिक इतिहास की कल्पना करना नैरूक्त दृष्टि की अवहेलना होगी। कारण वेद नित्य है वेदों का उद्भव सृष्टि के आदि में हुआ है। अतः सम्प्रति इसका नैरूक्त पक्ष द्रष्टव्य है। आचार्य यासक रोमशा की निरुक्ति करते हैं –**प्रशस्तं रौति या सा रोमशा।**[27] अर्थात् जिसका प्रशंसनीय वेदोपदेश व ज्ञान है उसका नाम रोमशा है। इस सूक्त में भावयव्य शब्द आया है अतः भावयव्य तथा रोमशा का संवाद माना जाता है। भावयव्य का अर्थ है –**भावं यौति मिश्रयति यः सः भावयवः भावयव एवभावयवः** अर्थात दूसरों की भावनाओं के साथ स्वयं को जोड़ने वाला।[28] अतः अर्थ स्पष्ट हुआ कि कोइ भी राजा या पुरूष जो अपनी जीवन संगिनी, सहयोगिनी पत्नी का सम्मान करने वाला हो वह भावयव्य हुआ। निम्न मंत्र के साथ तात्पर्य स्पष्ट होगा–

उपोप मे परामृश मा मे दभ्राणि मन्यथाः।

सर्वाहमस्मि रोमशा गान्धारीणामिवाविका।।[29]

मन्त्र का अर्थ है– हे राजन् अथवा देशवासियों ! मा मे दभ्राणि मन्यथाः तुम मुझे नारी होने के कारण अल्प ज्ञान अथवा अल्प बलवाला मत समझना, मैं गान्धारीणाम् **(गां वाचं धरन्ति यास्ताः गान्धार्यः तासां गान्धारीणाम्)**अर्थात् वेदविद्या को धारण करने वाली नारियों के मध्य अविका उस वेदविद्या की पालिका रक्षिका हूं। **उप उप** = बार बार मेरे समीप आकर **मे परामृश**– मुझसे परामर्श ग्रहण करो करने **सर्वाहमस्मि रोमशा–**मैं सभी प्रकार की राजनीति, दण्डनीति कूटनीति में भलीभांति **प्रशस्तं रौति–** प्रशंसनीय ज्ञान का कथन करने वाली हूँ। रोमशा ऋषिका समाज की नारियों को सही संदेश दे रही है कि नारी स्त्री होने के कारण कमतर न समझी जाए अपितु वह सभी प्रकार से प्रशंसनीया एवं सर्वसामर्थ्य से युक्त समझी जाए। इसी क्रम में अरण्यानी ऋषिका की परिचर्चा प्राप्त होती है।

अरण्यानी– अरण्य शब्द का अर्थ होता है जंगल या वन। अरण्यानी का अर्थ हुआ ऐसी विदुषी स्त्री जो स्वयं ब्रह्मविद्या प्राप्त कर अरण्यगामिनी वानप्रस्थ अथवा चतुर्थाश्रम सन्यास को धारण करने वाली हो। यह अरण्यानी सूक्त 10वें मण्डल के 146 वें सूक्त में प्राप्त होता है तद्यथा–

अरण्यान्यरण्यान्यसौ या प्रेव नश्यसि।

कथा ग्रामं न पृच्छसि न त्वा भीरिव विन्दति।।[30]

अर्थात् हे जंगल की ओर अभिमुख निवृत्ति मार्ग की ओर अग्रसर स्त्रि। **या असौ त्वम्**– जो यह तुम **अरण्यानी**– रमणीय भोग्य पदार्थो को न स्वीकार करने वाली अपने सुकोमल सौन्दर्य और यौवन को **प्र नश्यसि** पुरूष रूप से नष्ट कर रही हो, **कथा ग्रामं न पृच्छसि**– क्यों तुम गांव या नगर को नहीं पूछ रही हो? **न त्वांभीरिव विन्दति**– क्या तुम इस जंगल में प्रव्रज्या के मार्ग से उसके कष्टों से भयभीत नहीं हो? इस सूक्त के द्वारा नारियॉ प्रव्रज्या अर्थात् संन्यासादि की पूर्ण अधिकारिणी है, यह द्योतित होता है।[31] अरण्यासी ऋषिका यह सन्देश दे रही है कि महिलाऍ केवल घर गृहस्थी में ही फंसकर जीवन समाप्त न करें अपितु जीवन के चरम लक्ष्य की प्राप्ति हेतु अरण्यवन अर्थात् एकान्तोपासना के लिए नगर, ग्राम से बाहर निकलें।

वेदों में लगभग 30–35 ऋषिकाओं का स्पष्टतया विवरण प्राप्त होता है संप्रति विस्तार भिया नामग्रहण पूर्वक ही इस आलेख को संक्षिप्त कर परितोष करना पड़ेगा। संवाद सूक्तों में भी ऋषियों के साथ संवाद कर्त्री ऋषिकाएँ ही हैं। उपनिषद् की ऋषिकाएं ब्रह्मर्षियों के समकक्ष प्रतीत होती हैं। शास्त्रार्थ करने वाली गार्गी, घोषा, अपाला तथा आधुनिक समय में आचार्यमण्डन मिश्र जी की पत्नी श्रीमती भारती व आचार्या प्रज्ञा देवी व मेधा देवी (वाराणसी) अविस्मरणीय है।

एतदतिरिक्त ऋग्वेद में वर्णित ऋषिकाएं तथा उनका कार्य अतुलनीय है वे ऋषिकाएं हैं – रोमशा, लोपामुद्रा नधः अदिति, धोषा, काक्षीवती, वसुक्रपत्नी, यमी वैवस्वती, अगस्त्यस्वसा, अदिति दाक्षायणी, सूर्या सावित्रि, इन्द्राणी, अपाला, आत्रकी, शश्वती, आंगिरसी, सरमा, शची, पौलोमी, सार्पराज्ञी, इन्द्रमातरः, श्रद्धा कामायनी, रात्री भरद्वाणी, वागाम्भृणी, जुहू ब्रह्मजाया, दक्षिणा इत्यादि।

उन्नत सभ्य व प्रगतिशील राष्ट्र की द्योतिका वहॉ की स्त्रियों की दशा व दिशा से परिलक्षित होता है। भारतीय संस्कृति में नारियोंको पूज्या, आराध्या व वन्दनीया कहा गया है। वैदिक काल से स्मृतिकाल तक की यात्रा में जहॉ **स्त्रीहि ब्रह्मा बभूविथ** का घोष विश्वनियन्ता परमात्मा ने किया है वहीं महर्षि मनु उद्घोष करते हैं

यत्र नार्यस्तुपूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता।

यत्रैतास्तुन पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफला क्रिया ।।[32]

अर्थात् जिस परिवार व राष्ट्र में नारियों की पूजा सम्मान होता है वहॉ देवता रमण करते हैं और जिस घर व समाज में नारियों का आदर सम्मान नहीं होता वहॉ सभी कृत कार्य निष्फल हो जाते हैं।

इस महनीय श्रुति स्मृति वाक्यों को प्रमाणरूप में लेकर चलने वाला समाज वेदानुमोदित ऋषि, ऋषिकाओं का अद्यावधि स्व आदर्श बनाया हुआ है। भारतीय शिक्षा दार्शनिकों ने ऋषियों की तपः पूत अगाधमेधा को नमन किया है साथ ही मंत्र द्रष्ट्री ऋषिकाओं का वन्दन व पूजन भी किया है कारण भारत देश ही नहीं अपितु सम्पूर्ण विश्व ज्ञान की आद्या स्त्रोत भगवती श्रुति को परम प्रमाण मानता है।

प्रस्तुत आलेख वेदों में वर्णित मंत्र द्रष्ट्री ऋषिकाओं के यथार्थ स्वरूप पर आधारित है। इस आलेख का उद्देश्य है कि ऋषिकाओं का जीवन दर्शन अत्यन्त निर्मल व धवल है अतः इन तपः पूत मेधा की धनी ऋषिकाओं से आधुनिक समाज की नारियां भी अपने जीवन को तथाविध बनाने हेतु संकलप ग्रहण करें।

सन्दर्भ ग्रन्थ–

1.ऋग्वेद 10/91

2.ऋग्वेद 10/151

3.ऋग्वेद 10/85

4.ऋग्वेद 10/108

5.बृहद्देवता 2/82–84

6.निरूक्त 1/6/20

7.ऋग्वेद भाष्य 5/28

8.आर्षानुक्रमणी 10/82

9.निरूक्त 2/3/11

10.बृहदेवता 1/1

11.ऋग्वेद सायण भाष्य 9/87/3

12.वही9/113/2

13.निरूक्त 11/3/10

14.मैत्रायणी संहिता 4/6/7

15.यजुर्वेद 33/59

16.ऋग्वेद 10/14/10

17.धातुपाठ, भ्वादि–737

18.ऋग्वेद 10/125/03

19.वहीं 10/125/05

20.सायण भाष्य ऋग्वेद 10/125/01

21.ऋग्वेद 10/125/03

22.ऋग्वेद सायण भाष्य 10/125/03

23.रोमशा नाम ब्रह्मवादिनी ऋग्वेद, सायण भाष्य1/126/7

24.वैदिक इण्डेक्स भाग – 2 पृष्ठ – 254

25.ऋग्वेद सायण भाष्य, 1/126/1–2

26.ऋग्वेद सायण भाष्य, 1/126/7

27.निरूक्त– रू शब्दे+ मनिन् प्रशंसायां मत्वर्थे शः प्रत्यय+ टाप् = रोमशा

28.ऋ. 1/126/6

29.वही1/126/7

30.ऋग्वेद10/146/1

31.विश्ववारा नारी, पृ0 78

32.मनुस्मृति –3/56